लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या: 3; जुलाई-दिसंबर, 2021

कार्बि लोकगीतः एक संक्षिप्त परिचय

✍ तृप्ति रानी आचार्य

असम विभिन्न जनगोष्ठियों का निवास स्थल है। असम कई प्रकार की स्थानीय जनजातियों जैसे बड़ो, मिचिङ, तिवा आदि से भरपूर एक सुन्दर राज्य है और इन्हीं में से कार्बि जनजाति भी असम की प्रसिद्ध जनजातियों में से एक है। असम के कार्बि आङ्लङ जिले के नामकरण भी इसी जनजाति के नाम के आधार पर किया गया है, कार्बि आङ्लङ असम की पूरब दिशा में स्थित एक पहाड़ी इलाका है। असमीया साहित्य के प्रमुख कवि कलागुरु विष्णुप्रसाद राभा ने कार्बि जनजाति के लोगों को 'असम का कलम्बास' आख्या दी थी। राभा जी के इस मन्तव्य से कार्बि जनजाति के असम आगमन को लेकर कोई निश्चित तिथि तो निर्धारित नहीं की जा सकती, परंतु अनुमान के तौर पर कहा जाता है कि आज से लगभग सात हजार वर्ष पूर्व कार्बि जनजाति का असम आगमन हुआ था। कार्बि जनजाति का मानना है कि प्राचीन काल में वे चीन देश में स्थित होवांहो नदी के समीपवर्ती इलाकों में बसती थी और बाद में उस जगह का त्याग कर वह तिब्बत की सीमा की ओर बढ़ती गयी। तिब्बत में कई साल बसने के बाद लगभग सन् 300 ई. में वह मणिपुर की भूमि में उतर आयी। मणिपुर में कार्बि लोग 600 ई. से 1100 ई. तक रहे तथा धीरे-धीरे वे लोग बराक की ओर बढ़ते गये। कहा जाता है कि बराक के माहुर और माइबङ नामक जगहों में ये लोग सन् 1300 ई. से सन् 1540 ई. तक रहे। कार्बि लोग मूलतः कृषि केंद्रित होने के कारण उपजाऊ भूमि की तलाश में रहते थे तथा उसी तलाश में सन् 1548 ई. में वे कपिलि नदी के समीपवर्ती आमरेङ पहुँचे और स्थायी रूप में रहने लगे।

कार्बि जनजाति के लोग स्वयं को आरलेङ नाम से परिचय देना पसन्द करते थे, जिसका शाब्दिक अर्थ है-पहाड़ी इलाका। अतः

इससे स्पष्ट है कि इस जनजाति के लोग पहाड़ी क्षेत्रों में रहना पसन्द करते हैं।

असम की अन्य जातियों तथा जनजातियों की भाँति ही कार्बि जनजाति में भी लोकगीतों का प्रचलन है। लोक में प्रचलित गीतों को ही लोकगीत कहा जाता है। लोकगीत किसी भी जाति तथा जनजाति विशेष का परिचायक है, अतः लोकगीतों के अध्ययन से ही जाति तथा जनजाति वेशेष का परिचय सम्भव है।लोकगीत शब्द अंग्रेजी के 'Folk Song' का पर्याय है। लोक-गीतों के सम्बंध में समय-समय पर विभिन्न विद्वान अपना-अपना मत प्रस्तुत करते आये हैं।

इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार- "आदि मानव का उल्लासमय संगीत ही लोकगीत कहलाया है"।[1.]

स्टेण्डर्ड डिक्शनरी के अनुसार- "लोकगीत वे गीत है जो लोक समुह में प्रचलित है"।[2.]

अतः लोकगीतों में हमें जीवन के समस्त पहलूओं का स्वाभाविक चित्रण मिलता है। लोकगीतों के प्रणेता प्रकाश में नहीं आते व अधिकतर लोकगीतों का तो लिखित रूप भी प्राप्त नहीं होता।

लोकगीत तीन प्रकार के होते हैं यथा- लोक में प्रचलित गीत, लोक रचित गीत और लोक विषयक गीत।

कार्बि भाषा में लिखित साहित्य की अपेक्षा में मौखिक साहित्य अधिक समृद्ध है। कार्बि समाज में जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक पर्वों में गीत गाने का प्रचलन है। इनके द्वारा गाये गये ये गीत असल में एक प्रकार के विशेष छंदोबद्ध गीत हैं जो उनके पुजारी गाते हैं। कार्बि समाज में गोद-भराई के पर्व में गाये जानेवाले एक गीत निम्न लिखित है-

एहेम...हेम...हेम हेम आरनाम
पिथे रेस, पुथे रेस
छुम केथे, छवाइ केथे
छुम कांतां, छवाइ कांतां
मेन कांतां, मुन कांतां
पादाप आदाप, पादाप आरनि
छुरि आलाम कालि, फार' आलाम
कालि
ए...ज'...बांपि आप्राण इछि, बांपि
आमुइ इछि(बां)
छ'चपाथे, छु चपाथे,

लंथु केद'प, लंजक केद',प'(लाछि)

म'लंथु आरनि, म' लंजेक आरनि,

उवेक काचिलित् बेल

जइके केद' जइवान केद' नांजि (लाछि)

अ' हेमफु, अ' हेमेथे...तिरपि नां एनपन.

दाइपि नां एनपन

जाकं पांतां के नां, हरां पांतां के नां

लापुतां अ पेइ, लापुतां

अ'प'...आरनाम।

(बरगोहाँइ 2017:159)

(भावार्थ: हे महान हेमफु देवता, हमारी यह महिला अभी गर्भवती है। प्रसवकाल समागत है। प्रसव के समय माँ और नवजात बच्चे के प्रति आपकी कृपादृष्टि बनी रहे, यही कामना करते हुए प्रर्थना कर रहा हूँ। उसके बच्चे का जन्म मंगलमय हों तथा जल्द ही इस धरती में आएँ। माँ और बच्चे दोनों स्वस्थ रहें, इसके लिए आप सहायक हों।)

कार्बि में सुंदर शिशुगीत पाये जाते हैं। माएँ अपने नवजात बच्चे को सुलाने के लिए लोरी गाती हैं, यथा-

आलादुं लादुं

ला नेजां मानदुं

जनपार थेदुंदुं(ते)

जिर-फारे पादुन (रा)

पाच'दुन क्लेंदुन (छि)

मालं आफुलुम,

फ'रि पातेंफुंजि

दुं, दुं, दुं (बरगोहाँइ 2017:160)

(भावार्थ: मेरा सोना बेटा एकदिन बड़ा होगा, युवा होकर वह खेति के लिए भूमि की तलाश में जानेवाले लोगों का युवा नेता होगा और वह पहाड़ो का बड़ा-बड़ा पेड़ काटकर झुम के लिए भूमि तैयार करेगा, तब में महानंन्द से भोजन कर सकूंगी।)

शैशव के विभिन्न क्रीड़ा करते हुए बच्चा युवावस्था में पहुँच जाता है और आम युवक की भाँति ही वह भी अपनी प्रेयसी की तलाश करता है। पसन्द की युवती मिल जाने पर वह भविष्य जीवन साथ बिताने का प्रस्ताव रखता है। ह्रदय की इस सुन्दर अनुभूति को अभिव्यक्त करते हुए कार्बि युवक गाता है-

आंरं कुंरि छेर आथान

लंकि थारे ने पेन नां

लि ले चेरेनवेक लनां

म'

इजां छ' आरल' नांमान

नां ता जकप' थें पेन लां

मानप' आरि आछालान (ता)

इजां छ' पिनछ' नांमान

ने ता जकप' दें पेन फान

मानप' आर' आछालान

(बरगोहाँइ 2017:163)

(भावार्थ: हे प्रियतमा, जैसे भी हो हम दोनों का मिलन निश्चित है। हम भी एक सुखी संसार बसायेंगे। दूसरों की तरह हमारे भी बच्चे होंगे । अगर हमारा संतान लड़की हुई तो वह बड़ी होकर तुम्हें घर के कामों में हाथ बटायेगी और अगर लड़का हुआ तो वह मुझे सामाजिक कार्यों में सहायता करेगा।)

कार्बि युवा द्वारा गाया जानेवाला और एक प्रसिद्ध लेकगीत है 'बंअइ आलुन' गीत। यथा-

बं अइ मिर तांपे

मांवेपि नांले

फारकं पेन फारचे

कांथु चेपाते

कांथु चेदात् चे

छिम आव मंगवे

छक-छक रा बे-बे

तांदुनलं आनके

थारे नेंछेवे

छेंवे चेथाक ए

छें बिबि थेथे...

(बरगोहाँइ 2017:168)

(भावार्थ: हे प्रियतमा, ये फागुन है, प्रकृति में विभिन्न प्रकार के फूल खिले हैं, उन फूलों का रस पान करने के लिए अनेक पक्षियों का आगमन हो रहा है। इन पक्षियों को देखकर मेरा मन भी हाहाकार कर रहा है, कही तुम भी तो...)

कार्बि समाज के लोग प्रतिवर्ष अपनी कृषि कार्य आरम्भ करने से पूर्व एक सामुहिक पूजा का आयोजन करते हैं, जिसे वे अपनी भाषा में 'रंकेर' कहते हैं। इस पूजा के दौरान भी वे भगवान की प्रार्थना करते हुए गीत गाते हैं। यथा-

ए थान आरनाम, थिलि आरनाम

नेतुम नांथानछि केद'

नां थिलिछि केद'

नेतुम नांछ' नांछु केपलां

नेराइ पामेतु, नेकम पामेतु

रं आरल' रूप आरल'

हावार आरल' हापात आरल'

तेके नांतइरि, इंनार नांतइरि

निंकान आछेक, निंकान आजां

नांथक बमजि, नांजिर बमजि

बांछ' आलामदेइ, बांछ' आकिदेइ

केछ' वानरि, केउन-ए वानरि।

(बरगोहाँइ 2017:43)

(भावार्थ: हे परमपूज्य देवता, हम आपकी शरण में शरणापन्न हैं। आप हमें अपनी संतान के रूप में पालन करें। गावँ में खतरनाक जंगली जीव-जन्तु, हाथी, शेर आदि को मत भेजें। हर वर्ष हम आपकी पूजा करेंगे। हमारे गाँव में रोग-व्याधि को आने न दें।

कार्बि समाज में प्रचलित प्रत्येक लोकगीत छंदोबद्ध गीत है।कार्बि लोकगीतों में आम लोकगीतों की भाँति नवरस का समाहार परिलक्षित होता है। कार्बि लेकगीतों में शब्दालंकार तथा अर्थालंकारों का भरमार है। आशा है कि शिक्षा की लौ से कार्बि समाज तथा उनके धरोहर स्वरूप लोकगीतों का और अधिक परिष्कृत तथा परिमार्जित रूप उभर कर सामने आयेगा।

संदर्भ सूची :

1. लोकगीत परम्परा और प्रयोग (शोध ग्रंथ)- कुमारी सुमन सिंह, पृष्ठ संख्या -51
2. वही

ग्रंथ-सूची :

शोध-ग्रंथ

सिंह, कुमारी सुमन. लोकगीत परम्परा और प्रयोग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

सहायक ग्रंथ-सूची :

द्विवेदी, हजारी प्रसाद, संपा, जनपद, वर्ष 1

बरगोहाँइ, होमेन, संपा, कार्बि साहित्य प्रतिभार चानेकि, 2017

भट्ट, चंद्रशेखर, हड़ौती लोकगीत, 1966

वर्मा, राम सहाय, संपा, हरियाण संवाद, 1991

शर्मा, श्रीराम, संपा, लोकसाहित्य सिद्धांत और प्रयोग, 2020

शोध ग्रंथ :

सिंह, कुमारी सुमन. लोकगीत परम्परा और प्रयोग, 2004

संपर्क-सूत्र :

कार्बि आङलङ